तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 30 • अंक 115 • जनवरी-मार्च, 2002

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
(मान्य विश्वविद्यालय)

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-115 JANUARY-MARCH, 2002

Patron
Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in Hindi Section
Dr. Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial-Board
Dr. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr. R.P. Poddar, Pune
Dr. Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr. Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr. Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 115 JANUARY-MARCH, 2002

Editor in Hindi
Dr. Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial Office
Tulsi Prajna, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
LADNUN-341 306 (Rajasthan)

Publisher	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Type Setting	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Printed at	:	Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Sbuscription (Individuals) Three Year 250/-, Life Membership Rs. 1500/-
Sub-Institutions/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका/Contents

विषय	लेखक	पृष्ठ
जैनधर्म का प्राण-तत्त्व : अहिंसा	नीरज जैन	1
अहिंसा-एक समग्र चिन्तन	डॉ. बच्छराज दूगड़	15
भारतीय संस्कृति में अहिंसा व शांति का संदेश	डॉ. कुसुम भण्डारी	27
जैन संस्कृति एवं पर्यावरण-संरक्षण	प्राचार्य निहालचंद जैन	36
अहिंसा की वैज्ञानिक आवश्यकता और उन्नति के उपाय	अजित जैन 'जलज'	41
अहिंसा का विभिन्न रूपों का व्यवहारपरक विश्लेषण एवं शिक्षण	प्रो. चान्दमल कर्णावट	48
आधुनिक परिस्थितियां के परिप्रेक्ष्य में भगवान् महावीर का चिन्तन	रजनीश शुक्ल	51
गांधी-चिन्तन में अहिंसा	राजेन्द्रसिंह गुर्जर	58
नेतृत्व में अनेकान्त का प्रयोग	समणी डॉ. कुसुम प्रज्ञा	63
व्यवहार में अनेकान्त दृष्टि का विकास	साध्वी वर्धमानश्री	69
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	73
Psychophysiological Essence of Meditation	Dr. J.P.N. Mishra	92
Eternal values for Divine Society	Dr. Anil Dhar	97
Role of Jeevan Vigyan (Science of Living) in transformation of Human Personality	S.C. Jain	104

Postal Department : NUR 08   R.N.I. No. 28340/75

य:स्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टिः
श्रद्धाकाले चरणविषये यश्च चारित्रनिष्ठः ।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटुः कर्मयोगी तपस्वी,
नानारूपो भवतु शरणं वर्धमानो जिनेन्द्रः ॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, बाह्य के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी है, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित—

एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन

(महादेव लाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन)

41/1 सी, झावुतल्ला रोड़, कोलकता- 700 019

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित